(II) **भौतिक एवं वित्तीय नियोजन** (Physical and Financial Planning)—भौतिक एवं वित्तीय नियोजन से अभिप्राय है कि क्या नियोजन करते समय नियोजन अधिकारी को भौतिक प्रसाधनों को दृष्टि में रखना चाहिए अथवा वित्तीय साधनों को। भौतिक प्रसाधनों के अन्तर्गत देश में उपलब्ध श्रम-शक्ति, वस्तुएँ, प्राकृतिक साधन व अन्य साज-सामग्री को शामिल किया जाता है, जबकि वित्तीय नियोजन के अन्तर्गत वित्तीय (मौद्रिक) प्रसाधनों को दृष्टि में रखा जाता है।

(अ) **भौतिक नियोजन** (Physical Planning)—जब समस्त उपलब्ध वास्तविक साधनों को ध्यान में रखकर योजना का निर्माण किया जाता है तो उसे 'भौतिक नियोजन' (Physical Planning) कहते हैं। योजना का निर्माण पूरा होने के पश्चात् पूर्ति व माँग के सम्बन्ध में जो भी अनुमान लगाने का कार्य किया जाता है वह भौतिक नियोजन का ही अंश है। यह सभी जानते हैं कि विकास व पुनर्निर्माण कार्यों के लिए वास्तविक प्रसाधनों की आवश्यकता होती है। उदाहरणार्थ, किसी बाँध को तैयार करते समय सीमेंट, ईंट, पत्थर, लोहा तथा प्रशिक्षित श्रम-शक्ति का उपलब्ध होना जरूरी है। पर्याप्त वास्तविक प्रसाधनों (adequate real resources) के अभाव में यह सम्भव हो सकता है कि नियोजन का समस्त कार्य-कलाप असफल सिद्ध हो जाये। अत: इस सम्बन्ध में पूर्ण सतर्कता व विशुद्ध अनुमान का होना अत्यन्त आवश्यक है।

भौतिक आयोजन में उपलब्ध वास्तविक साधनों और उन्हे कैसे प्राप्त करना है, का पूर्ण मूल्यांकन किया जाता है ताकि योजना के कार्यकरण के दौरान अड़चने न आये। भौतिक आयोजन के लिए आवश्यक है कि कृषि तथा औद्योगिक उत्पादन सामाजिक-सांस्कृतिक तथा परिवहन सेवाओं से सम्बन्धित हो और अर्थव्यवस्था के राजगार, आय तथा निवेश के विषय से भौतिक लक्ष्य निर्धारित किये जायें। योजना मे विविध लक्ष्यो मे उचित सन्तुलन होने चाहिए। फिर, भौतिक योजना को अल्पकालीन खण्डश: (Piecemeal) आयोजन के बजाए समस्त दीर्घकालीन योजना के रूप में देखना पड़ता है।

कमियाँ (Limitations)

अल्पविकसित देशों में भौतिक नियोजन की कमियों को निम्नलिखित रूपो मे देखा जा सकता है—

(i) सही आँकड़ों का अभाव (Lack of accurate data)।
(ii) असन्तुलित ढाँचा (Unbalanced Structure)।
(iii) स्फीतिकारी दबाव (Inflationary Pressures)।
(iv) वित्तीय साधनों का अभाव (Lack of financial resouces)।

Scanned with CamScanner

(ब) वित्तीय नियोजन (Financial Planning)—वित्तीय नियोजन से अभिप्राय विकास कार्यों पर व्यय होने वाली धनराशि की समुचित व्यवस्था करना है। वित्तीय नियोजन में योजना के कार्यक्रम की वित्तीय आवश्यकताओं को आंका जाता है एवं उनका प्रबन्ध किया जाता है। वित्त आर्थिक नियोजन की मुख्य कुंजी है। यदि पर्याप्त वित्त उपलब्ध हो तो भौतिक लक्ष्य पूरे करना कठिन नही होता। वित्तीय नियोजन आवश्यक है ताकि पूर्तियों तथा माँग के बीच कुल आयोजन दूर किया जा सके और विविध परियोजनाओं की लागतों तथा लाभों का हिसाब लगाया जा सके।

भारतीय योजना आयोग ने लक्ष्य किया है कि—"वित्तीय नियोजन का सार यह है कि माँगों तथा पूर्तियों में इस प्रकार सामंजस्य स्थापित किया जाये कि कीमत ढाँचे में प्रमुख तथा गैर-योजनाबद्ध परिवर्तन किये बगैर भौतिक सम्भाव्यताओं का यथासम्भव पूर्ण रूप से विदोहन किया जा सके।" इस प्रकार यह समझा जाता है कि वित्तीय आयोजन माँगों तथा पूर्तियों के बीच सन्तुलन स्थापित करता है, स्फीति को रोकता है और आर्थिक स्थिरता लाता है।

परिसीमाएँ (Limitations)

अल्पविकसित देश में वित्तीय आयोजन की अपनी परिसीमाएँ होती हैं—

(i) बचत प्रवृत्ति पर प्रतिकूल प्रभाव (Adverse affect on propensity to consume)।

(ii) स्फीतिकारी दबाव (Inflationary Pressures)।

(iii) भुगतान-शेष की कठिनाइयाँ (Balance of Payments difficulties)।

(iv) समग्र आयोजन के लिए उपयुक्त नहीं (No appropriate for overall Planning)।

(v) अल्पविकसित देशों के लिए अनुपयुक्त (Unsuited for underdeveloped countries)।

Scanned with CamScanner